बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् - जगत् को व्याप्त करने में बाण के अगाध वैदुष्य (विद्वता) का प्रभूत योगदान है। हर्ष के समक्ष बाण कहते हैं - 'सम्यक् पठितो साङ्गो वेदः श्रुतानि च यथाशक्ति शास्त्राणि' और यह पाण्डित्य उनकी रचनाओं में प्रकट हुआ है।

संस्कृत के विद्वानों के बीच 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' यह उक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध है। बाण का व्यापक अनुभव एवं भ्रमण से प्राप्त-ज्ञान, उनकी उर्वर कल्पना-शक्ति तथा अगाध पाण्डित्य उनकी गद्यकृतियों में पग-पग पर दिखाई देता है। उन्होंने आदिकवि वाल्मीकि को अपना आदर्श न बनाकर जगत् को अपने सर्वांगपूर्ण रूप में प्रस्तुत करनेवाले महाभारतकार व्यास को ही आदर्श कवि के रूप में स्वीकार किया एवं उन्हें 'सर्वविद्' माना है। महाभारत में उनके ज्ञान का समावेश है। इसलिए यन्न भारते तन्न भारते। की लोकोक्ति चल पड़ी। इस पृष्ठभूमि में बाण ने अपनी रचनाएँ की थीं जिनमें भावपक्ष और कलापक्ष के समस्त उपकरणों के स्पर्श का उन्होंने संकल्प लिया था।

बाण की विद्वता का उदाहरण के लिए एक शब्द पर्याप्त संस्कृत-शब्दावली पर उनका कितना बड़ा अधिकार था। समूह के अर्थ में संचय, निचय, प्रकर, कदम्बक, जाल, निवह, राशि, कुल, यूथ, ग्राम, वृन्द, संहति, पेटल, पटल, सार्थ, निकर, पुञ्ज, गण, मण्डल, व्रात, दल, कलाप आदि अनेक शब्दों का प्रयो-ग किया है।

अनुभव की दृष्टि से बाण अद्वितीय हैं। उन्होंने न केवल प्रभात, संध्या, रजनी, वसन्त, सरोवर आदि के सौम्य मनमोहक चित्र खींचे हैं अपितु विन्ध्याटवी, ग्रीष्म आदि के भयावह रूप भी अंकित किए हैं। कादम्बरी में उज्जयिनी नगरी, राजप्रासाद, अच्छोद सरोवर, चण्डिकामंदिर आदि का भव्य चित्र अंकित करनेवाले बाण ने शूद्रक की राजसभा में विसर्जन की सजीव-चित्रण उन्होंने कादम्बरी के कथामुख भाग में किया है।

कल्पनाशक्ति की उर्वरता में बाण अनुपम हैं। किसी दृश्य वस्तु के वर्णन में जब वे उत्प्रेक्षाओं

Scanned with CamScanner

और उपमा का प्रयोग करने लगते हैं तो अलंकारों की झड़ी लगा देते हैं।

अपनी कल्पना के वैभव से ही बाण रसों और भावों के उद्भावन में सूक्ष्म-वर्तनियों पर विचरण करते हैं। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी बाण की कला श्लाघनीय है। उनकी रचनाओं में हर्ष, राज्यवर्धन, शूद्रक, तारापीड और चन्द्रापीड जैसे राजा एवं राजकुमार हैं तो यशोमती और कादम्बरी जैसी रानी और राजकुमारी भी हैं।

बाण किसी एक शैली को पकड़कर चलने वाले कवि नहीं हैं अपितु वे विषय-वस्तु के अनुरूप गद्य के विविध रूपों का उपयोग करते हैं। बाण सघन समासों के प्रयोग में भी निपुण हैं।

भाषा का आश्चर्यकर आकर्षण एवं अप्रस्तुत योजना की सजीवता बाण की साहित्यिक विभूति है। कल्पना के साथ अनुभूतियों का सामञ्जस्य एवं अप्रस्तुतयोजना की सजीवता बाण की साहित्यिक विभूति है। कथा कादम्बरी की समीक्षा करते हुए जर्मन कवि वेबर ने आरोप लगाया है कि "कठिन शब्दों के विकट जाल में कथा इस प्रकार फँसी हुई है कि पाठक प्रायः अपने धैर्य का संतुलन खो बैठता है। यह गद्यकाव्य वस्तुतः ऐसा भारतीय वन है, जिसकी झाड़ियों से होकर आगे बढ़ना तब तक असंभव है जब तक ~~कोई~~ पाठक रूपी पथिक अपना मार्ग उन्हें काटकर स्वयं नहीं बना लेता।.....

किन्तु संस्कृत-भाषा के सौन्दर्य तथा गरिमा से परिचित विद्वानों को कादम्बरी के दीर्घकाय वाक्य एवं समासजटिल पद बाधित नहीं करते क्योंकि वे बड़े पदों और कठोर वाक्यों को सरलता से छोटे वाक्यों में बदल सकते हैं। लम्बे वाक्यों का पूर्वापर भाग देखकर वे क्रमशः अन्वय करते हैं - इसमें वे आनन्द का अनुभव करते हैं। कला के क्षेत्र में बाण प्रविधियों को स्पर्श कर सम्पूर्ण को एकत्र करने की चेष्टा की - इसीलिए कहा गया —

'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्'

Uma Pandey
Dept. of Skt
B.A. III + I Styr.